आर.एन.आई.नं. RAJBIL/2010/52404

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं, विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम् ।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं, वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ।।

सेवा सौभाग्य

पू. कैलाश जी 'मानव' | मूल्य ▸ 5 वर्ष ▸15 अंक ▸171 मुद्रण तारीख ▸1 मार्च, 2026 कुल पृष्ठ ▸28

नन्हें हाथों में किताब
कल का निर्माण

आशा उत्साह की जननी

पूज्य श्री कैलाश जी 'मानव'

जीवन में कठिनाई, अवरोध और संघर्ष का क्रम चलता रहता है। ऐसे में प्रयास, आशा, विवेक और उत्साह बने रहना चाहिए। आशावादी व्यक्ति सदैव अपने लक्ष्य के शिखर को छू ही लेता है।

मनुष्य में अनंत संभावनाएँ छिपी हैं। यह उसी पर निर्भर करता है कि वह अपने विवेक का किस प्रकार उपयोग कर उन संभावनाओं से रूबरू होता है। जो जितना परिश्रमी, विवेकी और आशावादी होगा, वह उतनी ही शीघ्रता से अपनी तय मंजिल को हासिल करेगा। जीवन में चुनौतियाँ तो पग–पग पर हैं, उन्हें यदि व्यक्ति अवसर मान ले तो बुलंदी पर पहुँचा जा सकता है और यदि उनसे हार मान ले तो असफलता और अवसाद की उस गहराई में चला जाता है, जहाँ से उबर पाना प्रायः कठिन होता है।

यदि छोटी–मोटी रुकावटों से हार मान ली जाए तो नकारात्मकता हावी होकर आगे बढ़ने के सभी रास्ते रोक लेती है। अतः प्रयास, विवेक और परिश्रम के साथ सकारात्मकता बनी रहनी चाहिए। इससे व्यक्ति में आशा का संचार होता है। कहा भी गया है – "आशा उत्साह की जननी है।"

महात्मा नित्यानंद जी ने एक दिन अपने शिष्यों की बड़े ही विचित्र तरीके से परीक्षा ली। गुरुकुल में सभी शिष्यों को बाँस की शलाकाओं से बाल्टियाँ बनवाकर कहा – "नदी से जल भर लाओ और आश्रम की सफाई करो।"

बाँस की शलाकाओं से बुनी बाल्टियों में भला जल कैसे भरा और लाया जा सकता था? फिर भी गुरु की आज्ञा थी, अतः सभी शिष्य बाल्टियाँ लेकर नदी की ओर चल दिए। वे जब उनमें जल भरते तो सारा जल शलाकाओं के बीच के अंतर से बाहर निकल जाता। बाल्टियाँ भरते ही खाली हो जातीं। काफी देर तक वे इसी क्रम में लगे रहे और अंततः निराश होकर खाली बाल्टियों के साथ गुरुकुल लौट आए।

परंतु उनमें से एक शिष्य नदी तट पर ही ठहर गया। वह सुबह से दोपहर तक बाल्टी को जल से भरने के प्रयास में लगा रहा। इसका परिणाम यह हुआ कि बाँस की शलाकाएँ पानी के लगातार सम्पर्क से फूल गईं और उनके एक–दूसरे से जुड़ने से खालीपन समाप्त हो गया। तब वह बड़ी प्रसन्नता के साथ जल भरी बाल्टी लेकर गुरुकुल पहुँचा।

सभी सहपाठी आश्चर्यचकित थे। महात्मा नित्यानंद जी ने उसे दुलारते हुए शाबाशी दी और अन्य शिष्यों की ओर मुखातिब होकर बोले – "विवेक, धैर्य, निष्ठा और सतत परिश्रम से दुर्गम कार्य को भी कैसे सुगम बनाया जा सकता है, यह इसकी जीवंत मिसाल है।" इस प्रसंग का आशय यह है कि आशावादी व्यक्ति इसी शिष्य की तरह व्यावहारिक दृष्टिकोण से आगे बढ़ता है। जहाँ कहीं एक द्वार बंद होता है, वहाँ आशावादी दूसरा द्वार खोलने का प्रयास करता है। यह सब आशा, उत्साह, विवेक, धैर्य और सतत परिश्रम पर निर्भर करता है। लोग थोड़े समय तक प्रयास करते हैं और अनुकूल परिणाम न मिलने पर भाग्य को कोसने लगते हैं, जो सर्वथा अनुचित है। किसी ने ठीक ही कहा है – 'मन के हारे हार है, मन के जीते जीत'।

सेवा सौभाग्य

मूल्य ▸ 5 वर्ष ▸ 15
अंक ▸ 171 कुल पृष्ठ ▸ 28

मुद्रण तारीख ▸ 1 मार्च, 2026

सम्पादक मंडल

मार्ग दर्शक ▸ कैलाश चन्द्र अग्रवाल
सम्पादक ▸ प्रशान्त अग्रवाल
सहयोग ▸ विष्णु शर्मा हितैषी
भगवान प्रसाद गौड़
डिजाइनर ▸ विरेन्द्र सिंह राठौड़

सम्पर्क (कार्यालय)

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Nar Seva Narayan Seva
Sewa Parmo Dharm
MAKE GIVING YOUR HABIT

483, 'सेवाधाम' सेवा नगर
हिरण मगरी, सेक्टर-4,
उदयपुर (राज.) 313002, भारत
फोन नं. +91-294-6622222
वाट्सऐप: +91-7023509999
Web ▸ www.spdtrust.org
E-mail ▸ info@spdtrust.org

Seva Soubhagya Print Date 1 March, 2026 Registered Newspaper No. RAJBIL/2010/52404, Published by Sole-Owner, Publisher and Chief Editor Prashant Agarwal from Sevadham, Hiran Magri, Sector-4, Udaipur -313002 (Raj) Printed at Newtrack Offset Private Limited, Udaipur. Total pages-28 (No. of copies printed 1,50,000) cost-Rs.5/-

CONTENTS

इस माह में

जहाँ इलाज नहीं, उम्मीद धड़कती है

जन्मजात दिव्यांगता के दर्द को आशा...

नारायण एक्सप्रेस

न्यूमेटिक लिम्ब: उम्मीद की नई उड़ान

कैलिपर्स और सेवा का संकल्प...

दिल्ली व हैदराबाद में माप शिविर

सफलता वही जो हो सार्थक

जब जीवन में मनुष्य कठिनाई के दौर से गुजरता है तो उसे अपना दृष्टिकोण बदलने की आवश्यकता होती है, क्योंकि किसी भी मुश्किल परिस्थिति में एक सकारात्मक सोच उसे आगे बढ़ने का रास्ता दिखा सकती है। वह जीवन की वास्तविकता से रूबरू कराती है। वह अहसास कराती है कि जिन समस्याओं को बड़ा और कठिन समझा जा रहा है, वे असल में वैसी हैं नहीं। दरअसल समस्याएँ मुश्किल नहीं, बल्कि चुनौतियाँ हैं जो मनुष्य के लिए सफलता का एक अवसर है। दृढ़ निश्चय, धैर्य और निरंतर प्रयास से सफलता तो मिल ही जाती है। जिसके प्रति तड़प हो, वह मिलेगा ही, मिल ही जाता है।

सेवक प्रशांत भैया

श्रीरामचरितमानस में गोस्वामी तुलसीदास कहते हैं कि –
'जेहि कें जेहि पर सत्य सनेहू, सो तेहि न मिलई कछु संदेहू।'

मानस की इन पंक्तियों में सफलता के साथ जीवन की सार्थकता का सूत्र भी जुड़ा है। प्रभु का मिलना, उसमें एकाकार हो जाना ही जीवन की धन्यता है, केवल सफलता नहीं। सफलता को जीवन का अत्यंतिक सूत्र नहीं कह सकते। इससे बड़ा है–सार्थकता। उस सफलता का कोई मायने नहीं, जिसकी सार्थकता न हो। अतएव सफल होना है, किंतु उसके लिए किए जा रहे प्रयासों में उसकी सार्थकता भी भली प्रकार निरूपित होनी चाहिए। स्वामी विवेकानंद से संबंधित एक प्रसंग यह सिद्ध भी करता है। स्वामी जी एक नदी तट पर एक बार नौका के इंतजार में थे। तभी एक साधु वहाँ आए। उन्होंने स्वामी जी की तरफ देखकर पूछा – "अगर मैं गलत नहीं हूँ तो आप विवेकानंद हैं?" "जी हाँ, मैं विवेकानंद हूँ और इस समय नाव की प्रतीक्षा में यहाँ बैठा हूँ।" – विवेकानंद ने उत्तर दिया। साधु ने अहंकारपूर्वक हँसते हुए कहा – "अरे, मैं तो समझता था कि आप एक सिद्ध पुरुष हैं, साधना भी की है, मगर आप तो एक सामान्य आदमी की तरह नाव की प्रतीक्षा में समय व्यर्थ कर रहे हैं। आपसे अधिक साधना तो मैंने की है। मैं पानी पर चलकर नदी पार कर सकता हूँ। विश्वास न हो तो देखिए।"

यह कहते हुए खड़ाऊ पहने साधु नदी में उतर गया और पानी पर चलते हुए आधी नदी पार कर पुनः लौट आया। उसने गर्व से कहा – "इसे कहते हैं साधना और सिद्धि। अगर आपने सचमुच साधना की होती, सिद्धि प्राप्त की होती, तो मेरी तरह पानी पर चलते हुए कब के नदी पार कर चुके होते।"

साधु की बात सुनकर स्वामी जी मुस्कराए और पूछा – "कितने दिन लगे आपको यह सिद्धि प्राप्त करने में?" साधु ने कहा – "अब तक का सारा जीवन ही मैंने इसके लिए समर्पित कर दिया।"

विवेकानंद ने कहा – "जब चार आने देकर कुछ ही समय में नाव से नदी पार की जा सकती है, तो फिर इतने से काम के लिए सिद्धि हासिल करने में पूरा जीवन क्यों खपाया जाए? आप पूरा जीवन लगाकर सफल तो हुए, लेकिन मेरी दृष्टि में इस सफलता में कोई सार्थकता दिखाई नहीं देती।"

बंधुओं, धन और भौतिक सुख–सुविधाओं का अंबार लगा देना, ऊँचे पद पर प्रतिष्ठित होना सफलता तो है, लेकिन वह सार्थक तभी होगी जब उससे आपके जीवन में परिवर्तन आए और अर्जित सफलता से दूसरों का भी हित साधन हो। आप सफलता के लिए जो कुछ करते हैं, यह भी देखें कि उससे कितनों को पीड़ा पहुँचेगी या कितने उससे लाभान्वित हो सकेंगे। सफलता की अंधी दौड़ में सार्थक दृष्टि का होना भी अत्यंत आवश्यक है। ▪▪▪

हादसे ने तोड़ा सपना, सेवा ने दी नई राह

राजस्थान के नागौर जिले के जसनगर निवासी 29 वर्षीय मुकेश बालोटिया एक साधारण परिवार से हैं। पिता के निधन के बाद परिवार की जिम्मेदारी माँ सीता देवी पर थी और घर पेंशन से चलता था। मुकेश 10वीं तक पढ़े थे और परिवार को आगे बढ़ाना चाहते थे।

वर्ष 2022 में एक ट्रेन हादसे में उनका दायां पैर कट गया। इलाज और भारी कृत्रिम पैर के कारण सामान्य जीवन मुश्किल हो गया। कर्ज में डूबकर भी उन्हें राहत नहीं मिली।

यूट्यूब के माध्यम से उन्हें नारायण सेवा संस्थान के बारे में जानकारी मिली। 5 जनवरी 2026 को वे संस्थान पहुँचे। जाँच के बाद 13 जनवरी को उन्हें हल्का, टिकाऊ कृत्रिम पैर लगाया गया और तीन माह का कंप्यूटर प्रशिक्षण भी दिया गया।

मुकेश कहते हैं कि संस्थान से मिला अपनापन और निःशुल्क सुविधाएँ उनके लिए वरदान हैं। आज वे फिर से आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ रहे हैं और आत्मनिर्भर बनने की दिशा में काम कर रहे हैं।
उनकी कहानी उन सभी दिव्यांगजनों के लिए प्रेरणा है, जो कठिन परिस्थितियों में भी सही मार्गदर्शन से अपने सपनों को फिर से साकार कर सकते हैं।

जहाँ इलाज नहीं, उम्मीद धड़कती है
वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी हॉस्पिटल

सेवा ही संकल्प

माँ की चिंता, पिता की बेबसी और मरीज की उम्मीद, सबको सहारा देने आया है World of Humanity Hospital। 450 बेड, आधुनिक सुविधाएँ और निःशुल्क इलाज।

सेवा, संवेदना और सम्मान का जीवंत प्रतीक

कभी किसी माँ की आँखों में बेटे के भविष्य की चिंता देखी है या किसी पिता के हाथों में इलाज की फाइल के साथ छुपी बेबसी महसूस की है? इन्हीं भावनाओं से जन्मा एक सपना साकार हुआ है, नारायण सेवा संस्थान का World of Humanity Hospital।

यह सिर्फ एक अस्पताल नहीं, बल्कि दर्द में डूबे लोगों की शरणस्थली है। यहाँ का प्रशिक्षित नर्सिंग स्टाफ दवाइयों के साथ भरोसा भी देता है।

गुणवता

हाई–टेक तकनीक और सुव्यवस्थित वार्ड, हाइड्रोलिक बेड, ऑक्सीजन, एक्स–रे और जाँच उच्चतम स्वच्छता के बीच निःशुल्क इलाज, जैसी आधुनिक सुविधाएँ।

भविष्य

आने वाले वर्षों तक यह अस्पताल हजारों दिव्यांग जिंदगियों को नई उम्मीद और नया सवेरा देगा। यही सेवा है, यही मानवता 'नारायण सेवा संस्थान' का संकल्प।

नन्हे कदमों की उम्मीद: शाजन की नई शुरुआत

बिहार के सीतामढ़ी जिले के छोटे से गाँव हरपुर में रहने वाला नौ साल का शाजन राउत अपनी उम्र के बच्चों से थोड़ा अलग था। जहाँ उसके दोस्त गलियों में दौड़ते–खेलते और स्कूल जाते, वहीं शाजन अक्सर घर के एक कोने में बैठकर उन्हें देखा करता। उसकी आँखों में सपने तो थे, पर उसके कदम साथ नहीं दे पाते थे। जन्म से ही वह सीपी स्पास्टिक पैराप्लेजिया नामक बीमारी से जूझ रहा था, जिसने उसके दोनों पैरों को कमजोर बना दिया था।

शाजन के पिता, बबलू राउत, रोज दिहाड़ी मजदूरी करके किसी तरह परिवार का गुजारा करते थे। माँ नीलम देवी और चार बच्चों की जिम्मेदारी उनके कंधों पर थी। सीमित आमदनी में घर चलाना ही मुश्किल था, ऐसे में शाजन के इलाज का खर्च उनके लिए किसी पहाड़ से कम नहीं था। उन्होंने झाड़–फूँक से लेकर छोटे–बड़े अस्पतालों तक हर कोशिश की, लेकिन कोई स्थायी समाधान नहीं मिला। धीरे–धीरे उम्मीद की लौ बुझने लगी। इसी बीच एक दिन किसी परिचित ने उन्हें उदयपुर स्थित नारायण सेवा संस्थान के बारे में बताया। यह खबर उनके लिए अंधेरे में रोशनी की

किरण बनकर आई। नवंबर 2025 में, वे अपने बेटे को लेकर उदयपुर पहुँचे।
वहाँ डॉक्टरों ने शाजन की गहन जाँच की और ऑपरेशन की सलाह दी। नवंबर से जनवरी के बीच उसके दोनों पैरों के सफल ऑपरेशन किए गए। इलाज के दौरान परिवार ने धैर्य और विश्वास के साथ हर कठिनाई का सामना किया।

8 फरवरी 2026 को फॉलो–अप के दिन शाजन का प्लास्टर हटाया गया और उसे विशेष कैलिपर्स पहनाए गए। डॉक्टरों ने कहा,
"अगर नियमित अभ्यास और सही देखभाल होती रही, तो शाजन धीरे–धीरे चलने लगेगा।"

यह सुनते ही माता–पिता की आँखों से खुशी के आँसू बह निकले। वर्षों की पीड़ा और संघर्ष के बाद उन्हें अपने बेटे के भविष्य की झलक दिखाई दी।

आज शाजन पहले से कहीं ज्यादा मजबूत है। वह सहारे से ही सही, लेकिन अब अपने पैरों पर आगे बढ़ने लगा है। उसकी मुस्कान में उम्मीद है, आत्मविश्वास है और एक नई जिंदगी की चमक है। उसका हर छोटा कदम उसके परिवार की जीत की बड़ी कहानी कहता है।

शाजन के परिजन दिल से संस्थान के डॉक्टरों और दानदाताओं का आभार व्यक्त करते हैं, जिन्होंने नन्हे कदमों को नई राह दिखाई और उसके सपनों को फिर से उड़ान दी।

हर बच्चे के सपनों का सहारा

संस्थान के डॉक्टर बी. एल. शिंदे

जब किसी बच्चे की चाल जन्मजात दिव्यांगता के कारण रुक जाती है, तब केवल उपचार नहीं, बल्कि संवेदनशील शल्य चिकित्सा की आवश्यकता होती है। ऐसे ही करुणामय और समर्पित चिकित्सक हैं डॉ. बंसी लाल शिंदे (एम.एस. ऑर्थोपेडिक्स), जो नारायण सेवा संस्थान में अपनी सेवा से हजारों जीवनों को नया संबल दे रहे हैं।

10 मार्च 2017 से नारायण सेवा से जुड़े डॉ. शिंदे ने चिकित्सा को मात्र पेशा नहीं, बल्कि मानव सेवा का संकल्प बनाया है। उनके कुशल हाथों से की गई शल्य–क्रियाओं ने न जाने कितने बच्चों, युवाओं और परिवारों को फिर से चलने, काम करने और आत्मनिर्भर बनने की शक्ति दी है।

डॉ. शिंदे के लिए शल्य चिकित्सा केवल हड्डियों और जोड़ों का उपचार नहीं, बल्कि टूटे आत्मविश्वास और अधूरे सपनों को फिर से जोड़ने की प्रक्रिया भी है। हाथ, पैर और उंगलियों की जटिल जन्मजात विकृतियों की सफल सर्जरी के बाद जब कोई बच्चा पहली बार आत्मविश्वास से खड़ा होता है, वही पल उनकी सबसे बड़ी उपलब्धि बन जाता है।

जटिल फ्रैक्चर, प्लेटिंग, फिक्सेशन और पोस्ट–ट्रॉमेटिक सुधारात्मक सर्जरी के माध्यम से भी उन्होंने हजारों मरीजों को जीवन की मुख्यधारा से जोड़ा है। उनकी पहचान केवल एक कुशल सर्जन की नहीं, बल्कि एक करुणाशील सेवक की है। जो हर मरीज में एक केस नहीं, बल्कि एक पूरा जीवन देखता है।

नारायण सेवा संस्थान में डॉ. बंसी लाल शिंदे यह सिद्ध करते हैं कि जब शल्य चिकित्सा में करुणा जुड़ जाती है, तब वह केवल इलाज नहीं रहती वह जीवन का पुनर्निर्माण बन जाती है।

(1)

(2)

(3)

भागीरथ का सपना साकार

PIVOT

जब तकनीक ने थामा करुणा का हाथ

आंध्र प्रदेश मेडटेक जोन (AMTZ) और नारायण सेवा संस्थान के बीच समझौता यह केवल एक करार नहीं, बल्कि दिव्यांगजनों के जीवन में नई आशा की शुरुआत है। किसी के लिए पैर सिर्फ चलने का साधन होते हैं, लेकिन किसी के लिए वही पैर आत्मसम्मान, आत्मनिर्भरता और सपनों की राह होते हैं। जब यह राह छिन जाती है, तो संघर्ष शरीर के साथ–साथ मन का भी हो जाता है।

भारत के करोड़ों दिव्यांगजन वर्षों से इसी संघर्ष का सामना कर रहे हैं। कई सपने अधूरे रह जाते हैं और कई की दुनिया चार दीवारों तक सीमित हो जाती है। ऐसे समय में नारायण सेवा संस्थान सेवा की एक मजबूत रोशनी बनकर सामने आया है, जहाँ कृत्रिम अंग सिर्फ उपकरण नहीं, बल्कि फिर से जीने का साहस देते हैं। अब इस सेवा को तकनीक का सशक्त सहयोग मिला है।

विजन 2030

नारायण सेवा संस्थान का लक्ष्य है कि वर्ष 2030 तक 1 लाख उच्च गुणवत्ता वाले कृत्रिम अंग उन लोगों तक पहुँचाए जाएँ जो फिर से काम करना, चलना और आगे बढ़ना चाहते हैं।

वर्तमान में न्यूमैटिक नी जॉइंट और कार्बन फुट वाला एक उन्नत कृत्रिम अंग लगभग 41,000 तक का पड़ता है, जो गरीब और ग्रामीण परिवारों के लिए संभव नहीं हो पाता। अब स्वदेशी निर्माण के माध्यम से इसी उन्नत कृत्रिम अंग को केवल 10,000 में उपलब्ध कराने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाया गया है। इससे तकनीक अब केवल कुछ लोगों तक सीमित न रहकर सेवा और सशक्तीकरण का माध्यम बनेगी।

भारत के अग्रणी मेडिकल टेक्नोलॉजी पार्क आंध्र प्रदेश मेडटेक जोन (AMTZ) और नारायण सेवा संस्थान के बीच हुआ यह 5 वर्षीय समझौता कागजी औपचारिकता नहीं, बल्कि लाखों टूटे आत्मविश्वास को जोड़ने का संकल्प है।

नारायण एक्सप्रेस
दर्द से राहत और आनंद की अनूठी यात्रा

देश के कोने-कोने से शल्य चिकित्सा के लिए आने वाले दिव्यांग बच्चों और उनके परिजनों के मन में उपचार से पहले भय, पीड़ा और अनिश्चितता स्वाभाविक है। इस मानसिक कष्ट को कम करने और बच्चों के चेहरे पर मुस्कान लाने के उद्देश्य से नारायण सेवा संस्थान की एक अनूठी और संवेदनशील पहल है — नारायण एक्सप्रेस।

सेवा और समर्पण का दर्शन

इसके बाद नारायण एक्सप्रेस चिकित्सा केंद्रों का दर्शन कराती है, जहाँ सेवा और समर्पण की भावना स्वयं अनुभव होती है। यहाँ बच्चे अपने जैसे अन्य दिव्यांग बच्चों से मिलते हैं, जो उपचार के बाद नए सपने संजोते नजर आते हैं।

हेल्थ वंडर वर्ल्ड

हेल्थ वंडर वर्ल्ड एक ऐसी जगह है, जहाँ उपचार और जागरूकता को कृत्रिम शारीरिक अंगों के माध्यम से रोचक और समझने योग्य तरीके से प्रस्तुत किया गया है।

हरियाली और खेल

यात्रा की शुरुआत हरियाली से भरपूर पार्क से होती है। रंग–बिरंगी फुलवारी, पक्षियों की चहचहाट और हल्के–फुल्के खेल बच्चों के चेहरे पर मुस्कान ले आते हैं। कुछ पलों के लिए ही सही, बच्चे अपने दर्द को भूल जाते हैं।

आस्था और विश्वास के पड़ाव

यात्रा के दौरान वैष्णो देवी मंदिर दर्शन बच्चों और परिजनों को आस्था से जोड़ता है। कल्पवृक्ष स्टेशन इच्छाओं और विश्वास का संगम है, जबकि राम दरबार के दर्शन मन को शांति और संबल प्रदान करते हैं।

यह रेलगाड़ी सिर्फ सफर नहीं, बल्कि डर से उम्मीद और दुःख से खुशी तक की यात्रा है।
-निकिता, इंदौर

केवल रेल नहीं, खुशियों की दुनिया

नारायण एक्सप्रेस केवल एक रेलगाड़ी नहीं, बल्कि खुशियों की चलती–फिरती दुनिया है। यह संस्थान के 12 बीघा के विशाल सेवामहातीर्थ परिसर में आगंतुक दिव्यांग बच्चों और उनके परिजनों को भ्रमण पर ले जाती है।

न्यूमेटिक लिम्ब: उम्मीद की नई उड़ान

जहाँ दुनिया उसकी कीमत देखती है, वहाँ नारायण सेवा संस्थान दो कदम चलने भर को तरसने वाले जीवन को उम्मीद और सपने लौटाता है।

दुनिया भर में न्यूमेटिक लिम्ब जैसे अत्याधुनिक कृत्रिम अंग की चर्चा होते ही सबसे पहले उसकी ऊँची कीमत सामने रख दी जाती है। विकसित देशों में भी यह सुविधा निःशुल्क मिलना लगभग असंभव माना जाता है। इसका बाजार मूल्य करीब 50 हजार रु. है। ऐसे में जब कोई संस्थान इन्हें प्रतिदिन, निःशुल्क और पूर्ण संवेदनशीलता के साथ उपलब्ध करवा रहा है तो इसे सेवा और करुणा की जीवंत मिसाल ही माना जाएगा। ईश्वर कृपा से यह सेवा कार्य निरंतर कर रहा है नारायण सेवा संस्थान।

संस्थान के मानव मंदिर में हर दिन अनेक मासूम चेहरे जन्मजात शारीरिक विकृतियों के साथ आते हैं। किसी का एक पैर छोटा,दूसरा अपेक्षाकृत बड़ा है, पांव मुड़े है, हाथ अधूरे हैं, लेकिन आँखों में जीवन के सपने अब भी पूरे हैं। ऐसे ही एक छोटे बच्चे को जब पहली बार न्यूमेटिक लिम्ब पहनाया गया, तो वह केवल खड़ा ही नहीं हुआ, उसने अपने भीतर छुपे आत्मविश्वास को भी महसूस किया। उसके लिए वह कृत्रिम अंग मशीन नहीं था, बल्कि बरसों पूर्व खोई मुस्कान की वापसी थी।

बच्चे की माँ ने काँपते हाथों से संस्थान के चिकित्सकों का आभार और आशीष व्यक्त किया। उसकी आँखों से झरते आँसू वर्षों की पीड़ा और बेबसी को धो रहे थे। वह जानती थी कि यह प्रत्यक्ष सेवा दिखावा और प्रचार नहीं, बल्कि मानवीय करुणा के भाव का समर्पण है। यहाँ कोई शुल्क नहीं माँगा जाता, कोई स्थिति नहीं परखी जाती,केवल पीड़ा को अपने में महसूस किया जाता है।

नारायण सेवा संस्थान के लिए यह कोई कहानी नहीं बल्कि प्रतिदिन दोहराया जाने वाला संकल्प है। जहाँ विश्व भर की संवेदना थम सी जाती है, वहाँ यह

प्रोस्थेटिस्ट टीम द्वारा बनाये जाते हैं आधुनिक कृत्रिम अंग एवं कैलीपर्स

38779 कृत्रिम अंग निर्माण एवं 395727 लाख से अधिक कैलीपर्स निर्माण व वितरण

किसी का भविष्य संवारें

संस्थान उसे सेवा के माध्यम से मुखर करने आगे बढ़ता है। यह कार्य प्रचार के लिए नहीं, बल्कि उन बेबस जिन्दगियों के लिए है जो अपने पैरों पर खड़े होकर सम्मान के साथ जीना चाहती हैं।

यह कहानी दानी जनों के लिए एक मौन निवेदन है: आपका सहयोग किसी योजना का हिस्सा नहीं बल्कि किसी बच्चे के भविष्य निर्माण की नींव बनता है। जो असंभव दिखाई देता है वो यहां आपकी करुणा से हर दिन संभव हो रहा है। इसे आप चमत्कार भी मान सकते हैं।

संस्थान में हर दिन अनेक मासूम चेहरे आते हैं। कहीं मुड़े हुए हाथ-पाँव लेकिन उनकी आँखों में जीवन के सपने जीवित रहते हैं।

सेवा के संकल्प की प्रेरक यात्रा

नारायण सेवा संस्थान के साथ जुड़ी कैलिपर्स निर्माण की यात्रा केवल तकनीकी विकास की कहानी नहीं है, बल्कि यह सेवा, संवेदनशीलता और समर्पण का जीवंत उदाहरण है। यह सफर अगस्त 1996 में शुरू हुआ, जब पोलियो से प्रभावित बच्चों और वयस्कों के पुनर्वास के लिए स्थानीय स्तर पर ऑर्थोसिस् यानी कैलिपर्स और स्प्लिंट्स् तैयार करने की पहल की गई। उस समय न तो आधुनिक मशीनें थीं और न ही प्रशिक्षित तकनीशियन। स्थानीय कारीगरों को बुनियादी तकनीक सिखाकर उपकरण तैयार करना एक बड़ी चुनौती थी।

शुरुआती दौर में धातु (मेटल) के कैलिपर्स बनाए जाते थे, जो भारी होते थे और पहनने में असुविधाजनक थे। फिर भी, जिन बच्चों ने सर्जरी के बाद पहली बार अपने पैरों पर खड़ा होना सीखा, उनके लिए ये कैलिपर्स आशा की नई किरण थे। धीरे–धीरे मांग बढ़ती गई। कई ऐसे बच्चे भी, जिनके पैर लकवाग्रस्त थे पर विकृति नहीं थी, कैलिपर्स की मदद से बिना सर्जरी के चलने लगे।

साल 1999 में संस्थान ने एक बड़ा बदलाव किया। मेटल कैलिपर्स की बजाय हल्के और अधिक आरामदायक प्लास्टिक कैलिपर्स का निर्माण। इसी दौरान भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति और महान वैज्ञानिक एपीजे अब्दुल कलाम द्वारा प्रोत्साहित फ्लोर रिएक्शन ऑर्थोसिस (FRO) तकनीक से भी

प्रेरणा मिली। यह तकनीक घुटने की गति को बाधित किए बिना स्थिरता प्रदान करती थी, जो पारंपरिक कैलिपर्स से संभव नहीं था। परिणामस्वरूप, अनेक बच्चों को बेहतर संतुलन और आत्मविश्वास मिला। समय के साथ संस्थान ने लो–टेम्प्रेरेचर थर्मोप्लास्टिक और आधुनिक कंपोजिट सामग्री का उपयोग शुरू किया, जिससे कैलिपर्स हल्के, मजबूत और अधिक प्रभावी बने। आज नारायण सेवा संस्थान प्रतिदिन दर्जनों बच्चों और वयस्कों को ऑर्थोसिस प्रदान कर रहा है, जिससे वे आत्मनिर्भर जीवन की ओर कदम बढ़ा सकें। यह कहानी केवल उपकरण बनाने की नहीं है, बल्कि उन मुस्कानों की है जो पहली बार अपने पैरों पर खड़े होकर लौटती हैं। यहाँ कैलिपर्स सिर्फ सहारा नहीं देते। वे आत्मसम्मान और नई जिंदगी की शुरुआत बनते हैं।

जहाँ सपने बनते हैं सशक्त भविष्य 'लीलावती राठी मानव मंदिर'

सेवा की चार दशक लंबी यात्रा : भारत के दूर-दराज अंचलों से आने वाले दिव्यांगजनों के लिए सेवा, चिकित्सा और पुनर्वास की अलख नारायण सेवा संस्थान ने चार दशक पहले शुरू की थी। उदयपुर स्थित मुख्यालय से निकली यह सेवा-यात्रा आज देशभर में आशा और आत्मविश्वास का प्रतीक बन चुकी है।

तेलंगाना की राजधानी हैदराबाद के इस्लामिया बाजार क्षेत्र में स्थित 'लीलावती राठी मानव मंदिर' वर्ष 2004 से दिव्यांगजनों की सेवा में समर्पित है। 2023 में हुए नवीनीकरण के बाद यह केंद्र आधुनिक सुविधाओं के साथ और अधिक सशक्त रूप में सामने आया। यहाँ उपचार केवल शारीरिक विकृति तक सीमित नहीं, बल्कि आत्मसम्मान और भविष्य निर्माण तक विस्तृत है।

आत्मनिर्भरता की ओर मजबूत कदम : संस्थान का मानना है कि सच्चा पुनर्वास आत्मनिर्भरता से ही पूर्ण होता है। इसी उद्देश्य से यहाँ 45 दिवसीय स्वरोजगारोन्मुख प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित किए जाते हैं। प्रमुख प्रशिक्षण क्षेत्र। ▪ मोबाइल रिपेयरिंग ▪ कंप्यूटर प्रशिक्षण ▪ सिलाई–कढ़ाई ▪ तकनीकी कौशल विकास। इन प्रशिक्षणों से सैकड़ों दिव्यांगजन आज अपने पैरों पर खड़े होकर सम्मानजनक जीवन जी रहे हैं।

बदली हुई जिंदगियाँ, नई पहचान: बीते वर्षों में यहाँ से प्रशिक्षित अनेक दिव्यांगजन अपने–अपने शहरों में- ▪ सफल व्यवसाय चला रहे हैं ▪ परिवार का भरण–पोषण कर रहे हैं ▪ समाज के लिए प्रेरणा बन चुके हैं। कृत्रिम अंगों की सहायता से वे न केवल सक्रिय जीवन जी रहे हैं, बल्कि आत्मसम्मान के साथ आगे बढ़ रहे हैं।

सेवा में जुड़े हजारों हाथ:
इस केंद्र की सफलता के पीछे हजारों सेवाभावी हाथ जुड़े हैं।

▪ किसी ने समय दिया ▪ किसी ने संसाधन ▪ किसी ने संवेदना। निःशुल्क चिकित्सा एवं कृत्रिम अंग शिविरों के माध्यम से हजारों जरूरतमंदों को लाभ मिला है। जो कभी दूसरों के सहारे चलते थे, आज वे स्वयं अपनी राह बना रहे हैं।

आशा का मंदिर:

'लीलावती राठी मानव मंदिर' केवल एक सेवा केंद्र नहीं, बल्कि आशा, आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता का प्रतीक है। यहाँ हर कदम पर यह विश्वास मिलता है कि "दिव्यांगता अंत नहीं, बल्कि एक नई शुरुआत है।"

अत्याधुनिक चिकित्सा, पुनर्वास इस सेवा केंद्र में उपलब्ध हैं।

▸ फिजियोथैरेपी सुविधाएँ ▸ उन्नत कृत्रिम हाथ–पैर ▸ कैलिपर्स / सहायक उपकरण।

चलने–फिरने का पुनः प्रशिक्षण इन सुविधाओं के माध्यम से दिव्यांगजन दोबारा सक्रिय जीवन की ओर लौटते हैं और आत्मविश्वास प्राप्त करते हैं।

कृत्रिम पैर बने आशा के स्तम्भ-900 दिव्यांग खड़े होंगे

दिल्ली व हैदराबाद में माप शिविर

संस्थान की ओर से पिछले दिनों दिल्ली व हैदराबाद में दिव्यांगजन के हितार्थ संपन्न नि:शुल्क कृत्रिम अंग व कैलिपर माप शिविर में संस्थान की प्रोस्थेटिक एंड ऑर्थोटिक्स टीम ने 861 कृत्रिम अंग (हाथ -पांव) व 116 कैलीपर निर्माण हेतु माप लिए। इन दोनों ही शिविरों में दूर-दराज से आने वाले जरूरतमंद दिव्यांगजन को सहायक उपकरणों का वितरण भी किया गया।

दिल्ली

जीटीबी नगर स्थित पुरुषार्थ हरि मंदिर में 11 जनवरी को आयोजित शिविर में 180 दिव्यांगजन ने भाग लिया। जिनमें से 110 के लिए 116 कृत्रिम अंग व 46 कैलिपर बनाने का माप लिया गया। मुख्य अतिथि श्रीराम पिस्टन्स एंड रिंग्स लि. के श्री डीसी जोशी थे। अध्यक्षता एनजीसीएल के श्री महेश कुमार जी ने की। विशिष्ट अतिथि सर्वश्री अजय जी मित्तल, अभिषेक कुमार जी, सुरेश जी चांडक, हेमंत जी सूदन व डीसी गोयल जी थे। अतिथियों ने जरूरतमंदों को व्हीलचेयर आदि का भी वितरण किया। जन्मजात दिव्यांगता सुधारात्मक नि:शुल्क सर्जरी के लिए 10 दिव्यांगों का चयन हुआ। शिविर की व्यवस्था में फतेहपुरी आश्रम के जतन सिंह भाटी, कृष्णावतार, सत्यनारायण, रमेश कुमार, रोहिणी आश्रम के वेद प्रकाश, प्रवंजन साहू, जनकपुरी आश्रम के राहुल भटनागर और गाजियाबाद आश्रम के भंवर सिंह राठौड़ ने सहयोग किया। संचालन जितेंद्र शर्मा ने व प्रभारी हरिप्रसाद लड्ढा तथा रमेश शर्मा ने अतिथियों का स्वागत – अभिनंदन किया। पी एंड ओ टीम के प्रभारी डॉ. धुमित प्रजापति थे।

हैदराबाद(तेलंगाना)

चंपापेट सागर रोड स्थित मिनर्वा गार्डन में 1 फरवरी को आयोजित नारायण आर्टिफिशियल लिंब एवं कैलिपर माप शिविर में आसपास गांव व क्षेत्रों के 950 से अधिक दिव्यांगजन लाभान्वित हुए। शिविर के मुख्य अतिथि यश रिसोर्सेज रिसाइकलिंग प्रा. लि. के वित्त प्रबंधक श्री राकेश जी शर्मा थे। जिन्होंने संस्थान के दिव्यांग एवं निर्धनजन सेवा प्रकल्पों को ईश्वरीय अनुष्ठान बताया। अध्यक्षता संस्थान की स्थानीय शाखा संयोजिका श्रीमती अलका चौधरी ने की। विशिष्ट अतिथि श्रीमती अरुणा अग्रवाल, श्रीमती मीना चक्कीकार, श्री सुभाष अग्रवाल, श्री अभय चौधरी व श्री अनिल बाजपेयी थे। शिविर में 693 दिव्यांगजन के 745 कृत्रिम अंग व 52 के 70 कैलिपर बनाने का माप लिया गया। अतिथियों ने 15 जरूरतमंदों को व्हीलचेयर का वितरण भी किया। 10 दिव्यांगजन का दिव्यांगता सुधारात्मक सर्जरी के लिए डॉ. मानस रंजन साहू व डॉ. धुमित प्रजापति ने चयन किया। संस्थान की महागंगोत्री निदेशक सुश्री पलक अग्रवाल ने संस्थान के निःशुल्क सेवा प्रकल्पों एवं आगामी पांच वर्ष की सेवा योजना की जानकारी देते हुए अतिथियों का पाग, उपरणा व स्मृति चिन्ह प्रदान कर स्वागत –सत्कार किया। उन्होंने बताया कि जल्दी ही पुनः शिविर लगाकर चयनित दिव्यांग भाई–बहिनों को उनके माप अनुसार निर्मित कृत्रिम अंगों व कैलिपर का वितरण किया जाएगा। संचालन श्री महिम जैन व श्री प्रभुदास ने किया।

भारत में संचालित संस्थान की शाखाएं

राजस्थान

पाली
श्री कानिलाल मूथा,
मो. 07014349307
31, गुलजार चौक, पाली मारवाड़

भीलवाड़ा
श्री शिव नारायण अग्रवाल
मो. 09829769960
C/o नीलकण्ठ पेपर स्टोर, L.N.T. रोड, भीलवाड़ा–311001

बहरोड़
डॉ. अरविन्द गोस्वामी
मो. 09887488363
'गोस्वामी सदन' पुराने हॉस्पीटल के सामने बहरोड़, अलवर (राज.)
श्री भुवनेश रोहिल्ला, मो. 8952859514, लेडिज फैशन पोईन्ट, न्यू बस स्टैण्ड के सामने यादव धर्मशाला के पास, बहरोड़, अलवर

अलवर
श्री आर.एस. वर्मा
मो. 07300227428
के.वी. पब्लिक स्कूल, 35 लादिया, बाग अलवर

जयपुर
श्री नन्द किशोर बत्रा,
मो. 09828242497
5–C, उन्नति एन्कलेव, शिवपुरी, कालवाड़ रोड, झोटवाड़ा, जयपुर 302012

अजमेर
श्री सत्य नारायण कुमावत,
मो. 09166190962
कुमावत कॉलोनी, आर्य समाज के पीछे, मदनगंज, किशनगढ़, अजमेर

बूंदी
श्री गिरिधर गोपाल गुप्ता,
मो. 09829960811,
ए. 14, 'गिरधर–धाम', न्यू मानसरोवर कॉलोनी, चित्तौड़ रोड, बून्दी

झारखण्ड

हजारीबाग
श्री डूंगरमल जैन
मो.–09113733141
c/o पारस फूड्स, अखण्ड ज्योति ज्ञान केन्द्र, मेन रोड सदर थाना गली, हजारीबाग

रामगढ़
श्री जोगिन्दर सिंह जग्गी
मो. 7992262641
44ए, छोटकी मुरीम, नजदीक उमा इन्सीटयूट राजीव सिनेमा रोड, बिजुलिया, रामगढ़

धनबाद
श्री गोपाल कुमार खेडिया,
मो. 09608529923,
आजाद नगर भूलीनगर

मध्य प्रदेश

रतलाम
श्री चन्द्र पाल गुप्ता
मो. 09752492233,
मकान नं. 344, काटजूनगर, रतलाम

जबलपुर
श्री आर. के. तिवारी,
मो. 09926660739
मकान नं. 133, गली नं. 2, रामदड़िया ग्रीन सिटी, माढ़ोताल, जिला – जबलपुर

भोपाल
श्री विष्णु शरण सक्सेना
मो. 09425050136
ए–3/302, विष्णु हाईटेक सिटी, अहमदपुर रेल्वे क्रोसिंग के सामने, बावड़िया कलॉं, होशंगाबाद रोड जिला – भोपाल

बखतगढ़
श्री सुरेन्द्र सिंह सोलंकी,
मो. 06989609714, बखतगढ़, त.–बदनावर, जि.–धार

महाराष्ट्र

आकोला
श्री हरिश जी,
मो. 09422939767
आकोट मोटर स्टेण्ड, आकोला

परभणी
श्रीमती मंजु दरड़ा
मो. 09422876343

नांदेड़
श्री विनोद लिंबा राठोड़,
मो. 07719966739
जय भवानी पेट्रोलियम, मु. पो. सारखानी, किनवट, जिला – नांदेड़

पाचोरा
श्री सीताराम जी
मो. 09422775375

मुम्बई
श्रीमती रानी दुलानी
मो. 028847991, 9029643708,
10–बीव्ही, वाईसराय पार्क, ठाकुर विलेज कान्दीवली, मुम्बई

भायंदर
श्री कमलचंद लोढा,
मो. 8080083655 ए/103, 'देव आंगन' जैन मन्दिर रोड बावन जिनालय मन्दिर के पास, भायंदर (पश्चिम) ठाणे–401101

हिमाचल प्रदेश

हमीरपुर
श्री ज्ञानचन्द शर्मा,
मो. 09418419030
गाँव व पोस्ट–बिधरी, त. बड़सर जिला हमीरपुर – 176040

श्री रसील सिंह मनकोटिया मो. 09418061161, जामलीधाम, पोस्ट–रोपा, जिला–हमीरपुर–177001

हरियाणा

कैथल
डॉ. विवेक गर्ग
मो. 9996990807
गर्ग मनोरोग एवं दांतो का हस्पताल के अन्दर पदमा मॉल के सामने करनाल रोड, कैथल

श्री सतपाल मंगला
मो. 09812003662
3 68–ए, नई अनाज मंडी, कैथल

जुलाना मण्डी
श्री मनोज जिन्दल
मो. 9813707878
108 अनाज मण्डी, जुलाना, जींद

पलवल
श्री वीर सिंह चौहान
मो. 09991500251
विला नं. 228, ओमेक्स सिटी, सेक्टर–14, पलवल

फरीदाबाद
श्री नवल किशोर गुप्ता
मो. 09873722657
कश्मीर स्टेशनरी स्टोर, दुकान नं. 1डी/12, एन.आई.टी., फरीदाबाद, हरियाणा

करनाल
डॉ. सतीश शर्मा
मो. 09416121278
ओपीपी. गली नंबर 19, गोविंद डेयरी मेन रोड करण विहार नियर मेरठ रोड करनाल 132001

अम्बाला
श्री मुकुट बिहारी कपूर
मो. 08929930548
मकान नं.– 3791, ओल्ड सब्जी मण्डी, अम्बाला केन्ट–133001

नरवाना
श्री राजेन्द्र पाल गर्ग
मो. 09728941014 165–हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी, नरवाना, जीन्द

गोवा

गोवा
श्री अमृत लाल दोषी,
मो. 07798917888
'दोषी निवास' जैन मन्दिर के पास, पजीफोन्ड, मडगांव गोवा–403601

गुजरात

अहमदाबाद
श्री योगेन्द्र प्रताप राघव,
मो. 09274595349
म.नं.रू बी–77, गोल्डन बंग्लो, नाना चिलोड़ा, अहमदाबाद

उत्तर प्रदेश

बरेली
श्री कुंवरपाल सिंह पुंढीर
मो. 9458681074
विकास पब्लिक स्कूल के पीछे, स्वरूप नगर (चहवाई) जिला–बरेली
श्री विजय नारायण शुक्ला मो. 7060909449,
मकान नं.22/10, सी.बी.गंज, लेबर इण्डस्टीयल कॉलोनी बरेली

हाथरस
श्री दास बृजेन्द्र,
मो.–09720890047
दीनकुटी सत्संग भवन, सादाबाद

हापुड़
श्री मनोज कंसल
मो.–09927001112,
डिलाइट टैन्ट हाऊस, कबाड़ी बाजार, हापुड़

गजरौला, अमरोहा
श्री अजय एवं श्रीमती आरती शर्मा
मो.–08791269705 बांके बिहारी सदन, कालरा स्टेट, गजरौला, अमरोहा–244235

छत्तीसगढ़

दीपका, कोरबा
श्री सूरजमल अग्रवाल
मो. 09425536801

श्री देवनाथ साहू,
मो. 09229429407
गांव– बेला कछार, मु.पो. बालको नगर, जिला–कोरबा

बिलासपुर
डॉ. योगेश गुप्ता,
मो.–09827954009
श्रीमन्दिर के पास, रिंग रोड नं. 2, शान्ति नगर, बिलासपुर

बालोद
श्री बाबूलाल संजयकुमार जैन
मो. 9425525000
रामदेव चौक बालोद जिला–बालोद

जम्मू/कश्मीर

जम्मू
श्री जगदीश राज गुप्ता,
मो. 09419200395
गुरु आशीर्वाद कुटीर, 52–सी अपर शिव शक्ति नगर जम्मु–180001

दिल्ली

शाहदरा
श्री विशाल अरोड़ा
मो. 08447154011
श्रीमान रविशंकर जी अरोड़ा
मो.0 9810774473
मैसर्स शालीमार ड्राइक्लीनर्स
एफ1461 गली नं. 2 शालीमार पार्क, D.C.B. ऑफिस के पास, शाहदरा

नारायण दिव्यांग सहायता केन्द्र

महाराष्ट्र

मुम्बई

मो. 09529920090,07073452174
09529920088
शिवे सृष्टि सीएचएस लिमिटेड, बिल्डिंग नं. 4–बी, फ्लैट नंबर 608, बॉम्बे डाईंग महादा बोइवाड़ा, नयागांव, दादर (पूर्व) मुंबई (महाराष्ट्र) पिनकोड 400014

पूणे

मो. 09529920093
17/153 मेन रोड, गणेश सुपर मार्केट गोखले नगर, पूणे–16

दिल्ली

रोहिणी

मो. 08588835718
08588835719, बी–4/67, सेक्टर–8, रोहिणी, दिल्ली, पिन कोड 110085

जनकपुरी, नई दिल्ली

07023101167, 07412060406
सी2/287, 4 फ्लोर, जनकपुरी, नई दिल्ली–110058

विकासपुरी, नई दिल्ली

मो. 09257017592
मकान नं. 342 ब्लॉक–सी, मद्रासी मन्दिर के पास विकासपुरी 110018

हरियाणा

गुरूग्राम

मो. 08306004802,
हाउस नं.–1936 जीए, गली नं.–10, राजीव नगर ईस्ट, माता रोड, सी. आर.पी.एफ. कैम्प चौक, गुरुग्राम – 122001

हिसार

मो. 9257017593, मकान नं. 2249, सेक्टर–14, हिसार 125005

पंजाब

लुधियाना

मो. 07023101153
311/312, बी–17, गुलाटी डांस क्लास के पास, भारत नगर, लुधियाना 141001

चण्डीगढ़

मो. 07073452176
मकान नंबर 3468 ग्राउंड फ्लोर, सेक्टर – 46–सी, चंडीगढ़–160047

बिहार

पटना

मो. 09257110805, मकान नं.–23, किताब भवन रोड नॉर्थ एस.के. पुरी, पटना–13

उत्तर प्रदेश

मेरठ

मो. 09257110802
38, श्री राम पैलेस, दिल्ली रोड, नियर सब्जी मंडी, माधव पुरम, मेरठ

लखनऊ

मो. 09351230395
फ्लेट नम्बर 202, गुरूकृपा अपार्टमेंट न्यू श्रीनगर आलमबाग लखनऊ 226005 (उ.प्र.)

राजस्थान

जोधपुर

मो. 08306004821
जूनी बागर, महामन्दिर जोधपुर (राज) 342001

कोटा

मो. 07023101172
नारायण सेवा संस्थान, मकान नं. 2–बी–5 तलवंडी, कोटा (राज.) 324005

अजमेर

नारायण सेवा संस्थान C/O श्रीमती कैलाश उपाध्याय पत्नी स्वर्गीय श्री विश्वप्रकाश उपाध्याय मकान नं. 68, माली मोहल्ला, आनासागर लिंक रोड, शिव मार्ग, कृष्णा गंज, अजमेर (राजस्थान) 305001
मो. नं. 9216022978

गुजरात

सूरत

मो. 09529920082
27, सम्राट टाऊनशिप, सम्राट स्कूल के पास, परवत पाटीया, सूरत

वडोदरा

मो. 09529920081
मकान नंबर ए–2/5, सिद्धार्थ पार्क, साईदीप नगर के पास, टाटा एयरक्राफ्ट कॉम्प्लेक्स के सामने, न्यू बीआईपी रोड, बड़ौदा (गुजरात), पिनकोड 390022

अहमदाबाद

मो. 09529920080, 08306008208
07/ए, कपिलकुंज सोसायटी, विजय नगर के सामने, मेट्रो स्टेशन, नारायणपुरा, अहमदाबाद (गुजरात) पिनकोड 380013

(कर्नाटक)

बेंगलुरू

मो. 09341200200, नारायण सेवा संस्थान 40 (12) प्रथम फ्लोर, मॉडल हाउस कॉलोनी, अपोजिट रमना पार्क, एनआर कॉलोनी, बसवानगुड़ी, बेंगलुरु–560004

वेस्ट बंगाल

कोलकाता

09529920097, मकान नंबर–580, स्वामी सारणी म्याला, बागान, कालांदी, कोलकाता (पश्चिम बंगाल) पिनकोड 700048

नारायण नि:शुल्क फिजियोथेरेपी सेन्टर

उत्तर प्रदेश

हाथरस

मो. 07023101169
एलआईसी बिल्डिंग के नीचे, अलीगढ़ रोड, हाथरस

मथुरा

मो. 07023101163
मकान नं. 212053, राधानगर, भारत पेट्रोलियम अधिकारी आवास बिल्डिंग, मथुरा (उ.प्र.)

अलीगढ़

मो. 07023101169
एम.आई.जी. –48 विकास नगर, आगरा रोड़, अलीगढ़

उत्तर प्रदेश

गाजियाबाद

मो. 07073474435
श्रीमती शीला जैन नि:शुल्क फिजियोथेरेपी सेंटर, बी.–350 न्यू पंचवटी कॉलोनी, गाजियाबाद – 201009

लोनी

मो. 9257110802
श्रीमती कृष्णा मेमोरियल नि:शुल्क फिजियोथेरेपी सेन्टर, 72 शिव विहार, लोनी बन्थला, बिरोड़ी रोड (मोक्षधाम मन्दिर) के पास लोनी, गाजियाबाद

आगरा

मो. 07023101174
मकान नंबर ई–52, किठजी स्कूल के पास, कमला नगर, आगरा (उत्तर प्रदेश) पिन कोड रू. 282005

छत्तीसगढ़

रायपुर

मो. 07869916950, 08306004806
मीरा जी राव, म.नं.–29/500 टीवी टावर रोड, गली नं.–2, फेस–2 श्रीरामनगर, पो.–शंकरनगर रायपुर, (छ.ग.)

गुजरात

राजकोट

मो. 09529920083
बी–33, शिव शक्ति कोलोनी, जेटको टावर के सामने, यूनिवर्सिटी रोड, राजकोट 360005

उत्तराखण्ड

देहरादून

मो. 07023101175
साई लोक कॉलोनी, गांव कार्बरी ग्रांट, शिमला बाय पास रोड, देहरादून 248007

दिल्ली

फतेहपुरी

मो. 08588835711, 07073452155
6473 कटरा बरियान, अम्बर होटल के पास, फतेहपुरी, दिल्ली–6

शाहदरा

मो. 07073474435, बी–85, ज्योति कोलोनी, दुर्गापुरी चौक, शाहदरा

मध्य प्रदेश

इन्दौर

मो. 09529920087
43, चन्द्रलोक कॉलोनी खजराना रोड, इंदौर–452018

हरियाणा

अम्बाला

मो. 07023101160
सविता शर्मा, 669, हाउसिंग बोर्ड कोलोनी अरबन स्टेट के पास, सेक्टर–7 अम्बाला

कैथल

मो. 08696002432
फ्रेंड कॉलोनी, गली नम्बर 3 करनाल रोड़, हनुमान वाटिका के पास कैथल (हरियाणा)

राजस्थान

जयपुर

मो. 09928027946, 09257110807
बद्रीनारायण वैद फिजियोथेरेपी हॉस्पीटल एण्ड रिवर्स सेन्टर बी–50–51 सनराईज सिटी, मोक्ष मार्ग, निवारू झोटवाड़ा, जयपुर

तेलंगाना

हैदराबाद

मो. 09573938038
लीलावती भवन, 4–7–122/123 इसामिया बाजार, कोठी, संतोषी माता मंदिर के पास, हैदराबाद –500027

दानवीर का आभार

श्रीमती प्रेमलता सिंघल एवं स्वर्गीय मेजर एम.एल. सिंघल अंधेरी (पूर्व) महाराष्ट्र

अपने परिचितों, परिजनों अथवा स्वयं के जन्मोत्सव, वैवाहिक वर्षगांठ के साथ पुण्यात्माओं की पुण्यतिथि को बनाएं यादगार...

जन्मजात पोलियोग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000 रू.	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000 रू.
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000 रू.	13 ऑपरेशन के लिए	52,500 रू.
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000 रू.	5 ऑपरेशन के लिए	21,000 रू.
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000 रू.	3 ऑपरेशन के लिए	13,000 रू.
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000 रू.	1 ऑपरेशन के लिए	5,000 रू.

दुर्घटनाग्रस्त अंगविहीन एवं दिव्यांगों को दें कृत्रिम अंग का उपहार

वस्तु	एक नग सहयोग	तीन नग सहयोग	पांच नग सहयोग	ग्यारह नग सहयोग
कृत्रिम अंग (हाथ-पैर)	10,000 रू.	30,0000 रू.	50,0000 रू.	1,10,000 रू.
तिपहिया साईकिल	5,000 रू.	15,000 रू.	25,000 रू.	55,000 रू.
व्हील चेयर	4,000 रू.	12,000 रू.	20,000 रू.	44,000 रू.
कैलिपर	2,000 रू.	6,000 रू.	10,000 रू.	22,000 रू.
वैशाखी	500 रू.	1,500 रू.	2,500 रू.	5,500 रू.

दो जून की रोटी के लिए बेबस निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन-नाश्ता सहयोग मित्ति (वर्ष में एक दिवस 100 दिव्यांग एवं निर्धनों के लिए सहयोग हेतु मदद)	
नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37,000 रू.
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30,000 रू.
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15,000 रू.
नाश्ता सहयोग राशि	7,000 रू.
100 दिव्यांग एवं निर्धन बच्चों की भोजन सेवा	3,000 रू.

आशा की नई उड़ान रखने वाले दिव्यांगजनों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल/कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि			
1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि	7,500 रू.	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि	22,500 रू.
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि	37,500 रू.	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि	75,000 रू.
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि	1,50,000 रू.	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि	2,25,000 रू.

नारायण चिल्ड्रन एकेडमी के बच्चों के सपनों को करें साकार

1 एक बालक का 1 वर्ष का शिक्षा सहयोग	11,000/-
5 बालक का 1 वर्ष का शिक्षा सहयोग	55,000/-
20 बालक का 1 वर्ष का शिक्षा सहयोग	2,20,000/-

Bank Name : State Bank of India
Account Name : Narayan Seva Sansthan
Account Number : 31505501196
IFSC Code : SBIN0011406
Branch : Hiran Magri, Sector No.4, Udaipur-313001

Donate via UPI
Google Pay PhonePe Paytm
narayanseva@sbi

अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान के नाम से संस्थान के खाते में जमा करवाकर हमें सूचित करें

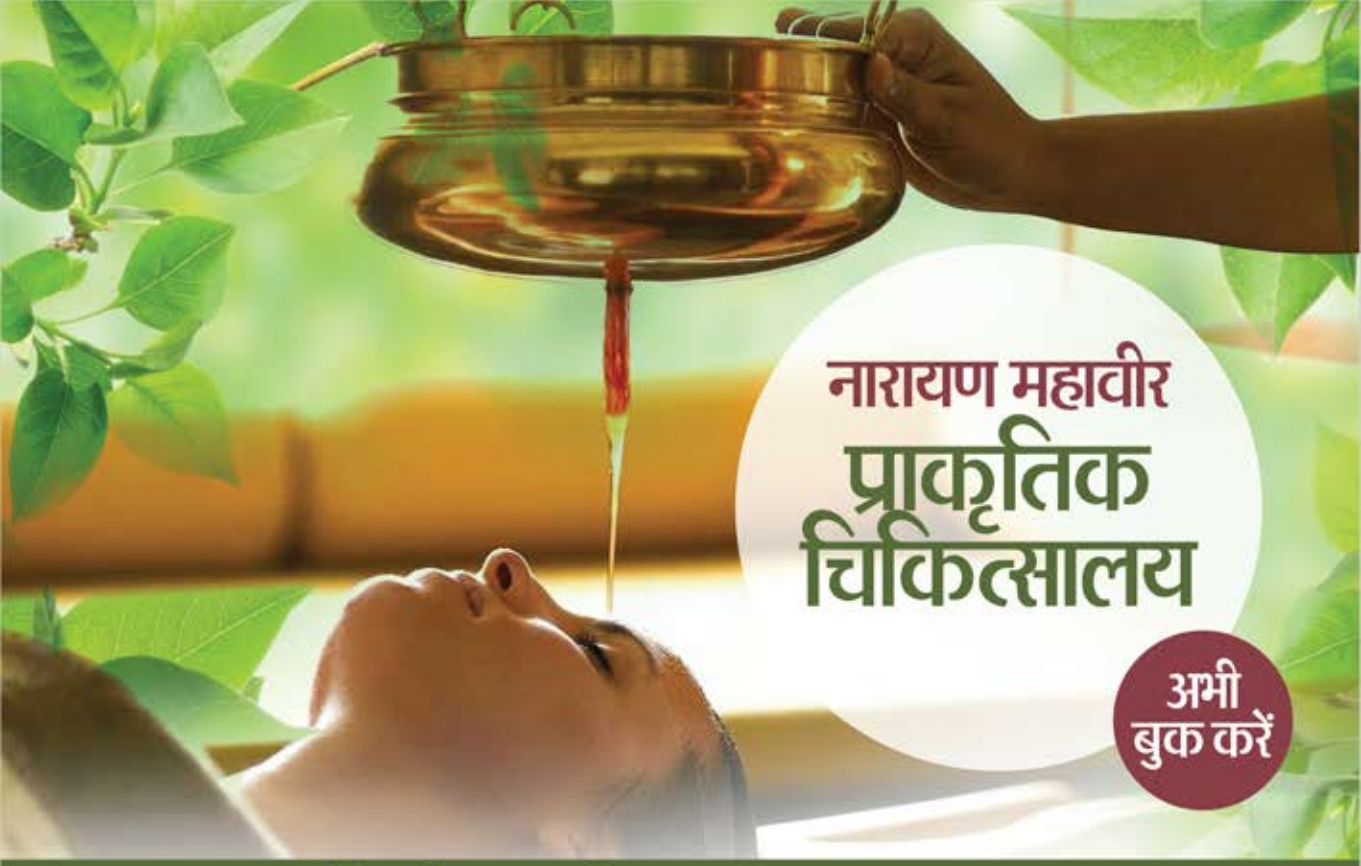

प्रकृति ही हमारी सच्ची स्वास्थ्य रक्षक

सेवा सौभाग्य - प्रपत्र-4

समाचार पत्र के स्वामित्व एवं अन्य विषयों से सम्बन्धित विवरण घोषणा-पत्र

1. प्रकाशन स्थल	:	उदयपुर
2. प्रकाशन अवधि	:	मासिक
3. मुद्रक का नाम	:	न्यूट्रेक ऑफसेट प्राईवेट लिमिटेड
4. क्या भारत का नागरिक है	:	हाँ
5. पता	:	13, भोपा मगरी, हिरण मगरी, सेक्टर- 3, उदयपुर (राज.) 313001
6.प्रकाशक का नाम	:	प्रशान्त अग्रवाल
7. क्या भारत का नागरिक है	:	हाँ
8. पता	:	483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, सेक्टर-4, उदयपुर (राज.) 313001
9.सम्पादक का नाम	:	प्रशान्त अग्रवाल
10. क्या भारत का नागरिक है	:	हाँ
11.पता	:	483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, सेक्टर-4, उदयपुर (राज.) 313001
12. उन व्यक्तियों के नाम व पते	:	प्रशान्त अग्रवाल

जो समाचार पत्र के स्वामी हो तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक साझेदार या हिस्सेदार हो।

मैं प्रशान्त अग्रवाल एतद् द्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

प्रशान्त अग्रवाल

45वां
दिव्यांग एवं निर्धन सामूहिक विवाह समारोह
2026

आपश्री सादर
आमंत्रित हैं।

दिनांकः 14-15 मार्च, 2026
स्थानः सेवा महातीर्थ
बड़ी, उदयपुर (राज.)

YouTube
LIVE

Seva Soubhagya Print Date 1 March, 2026 Registered Newspaper No. RAJBIL/2010/52404, Published by Sole-Owner, Publisher and Chief Editor Prashant Agarwal from Sevadham, Hiran Magri, Sector-4, Udaipur -313002 (Raj) Printed at Newtrack Offset Private Limited, Udaipur. Total pages-28 (No. of copies printed 1,50,000) cost-Rs.5/-